International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 21-02-2026, Accepted: 24-03-2026, Published: 08-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 43-45

आदिवासियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले औषधीय पौधों का भौगोलिक अध्ययन: अनूपपुर जिले के विशेष संदर्भ में

डॉ. जिया लाल राठौर[1], डॉ. संध्या सिंह राठौर[2]
[1] भूगोल विभाग, शासकीय महाविद्यालय जैतपुर, जिला–शहडोल, मध्य–प्रदेश, भारत
[2] वनस्पतिशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय जैतपुर, जिला–शहडोल, मध्य–प्रदेश, भारत

सारांश
अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जनजातीय क्षेत्र है जहाँ की जनसंख्या का बड़ा भाग गोंड, बैगा, कोरकू तथा अन्य आदिवासी समुदायों से संबंधित है। इन समुदायों की जीवन शैली प्रकृति–आधारित है तथा वे औषधीय पौधों के पारंपरिक ज्ञान में निपुण हैं। इस अध्ययन में अनूपपुर जिले के विभिन्न जनजातीय गाँवों में पाए जाने वाले औषधीय पौधों की पहचान, उनका उपयोग, भौगोलिक वितरण तथा संरक्षण स्थिति का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि यहाँ के आदिवासी लगभग 70–80 प्रमुख औषधीय पौधों का उपयोग विभिन्न रोगों जैसे—बुखार, घाव, सर्दी–जुकाम, पाचन विकार, त्वचा रोग, तथा साँप के काटने जैसी समस्याओं के उपचार में करते हैं। भौगोलिक दृष्टि से जिले का वन क्षेत्र, ऊँचाई, जलवायु तथा मिट्टी की विविधता इन पौधों की जैवविविधता को प्रभावित करती है। यह अध्ययन पारंपरिक औषधीय ज्ञान के संरक्षण और सतत उपयोग की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्य–शब्द: आदिवासी, औषधीय पौधे, जैवविविधता, आदिवासी पारंपरिक ज्ञान, वन क्षेत्र

प्रस्तावना

भारत विविध भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं जैविक संपदाओं से समृद्ध देश है। यहाँ की आदिवासी जनसंख्या सदियों से प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करती आई है। विशेष रूप से वनवासी समुदायों का जीवन वन संसाधनों पर आधारित है, जिनमें औषधीय पौधों का उपयोग प्रमुख स्थान रखता है। इन समुदायों ने अपने परंपरागत ज्ञान के आधार पर अनेक रोगों का उपचार जड़ी–बूटियों से करना सीखा है। अनूपपुर जिले में रहने वाले गोंड, बैगा, कोरकू, और अन्य आदिवासी समुदाय औषधीय पौधों के उपयोग में पारंपरिक रूप से निपुण हैं। यह क्षेत्र घने वनों, पर्वतीय भू–आकृतियों एवं विविध जलवायु परिस्थितियों से संपन्न है, जो जैव विविधता को अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। यहाँ पाई जाने वाली जड़ी–बूटियाँ न केवल स्थानीय लोगों की स्वास्थ्य सुरक्षा में सहायक हैं, बल्कि पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भौगोलिक दृष्टि से यह अध्ययन अनूपपुर जिले के विभिन्न ग्रामों एवं वन क्षेत्रों में पाए जाने वाले औषधीय पौधों के वितरण, उपयोगिता, उपलब्धता, एवं संरक्षण की स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि किस प्रकार पर्यावरणीय परिवर्तन, आधुनिक चिकित्सा का प्रसार, एवं सामाजिक–सांस्कृतिक बदलाव आदिवासियों के इस पारंपरिक ज्ञान को प्रभावित कर रहे हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य केवल औषधीय पौधों की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके भौगोलिक वितरण, लोकज्ञान, एवं सामुदायिक उपयोग को वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करना भी है ताकि भविष्य में इन अमूल्य संसाधनों का संरक्षण एवं सतत् उपयोग सुनिश्चित किया जा सके। भारत प्राचीन काल से ही औषधीय पौधों का भंडार रहा है। मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में यह परंपरा आज भी जीवित है। अनूपपुर जिले के घने वन क्षेत्र और पहाड़ी भू–आकृतियाँ विविध औषधीय वनस्पतियों का घर हैं। यहाँ के आदिवासी न केवल इन पौधों को पहचानते हैं, बल्कि पीढ़ी दर पीढ़ी उनके औषधीय प्रयोग का ज्ञान भी संजोए रखते हैं। यह अध्ययन इस पारंपरिक ज्ञान को वैज्ञानिक रूप से अभिलेखित करने और इसके भौगोलिक वितरण को समझने का प्रयास है।

अध्ययन क्षेत्र

अनूपपुर जिला मध्य प्रदेश के दक्षिण–पूर्वी भाग में स्थित है। यह जिला भौगोलिक दृष्टि से विंध्य एवं सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों के संधि क्षेत्र में आता है, जिसके कारण यहाँ की स्थलाकृति विविधतापूर्ण है। जिले का कुल क्षेत्रफल लगभग 3701 वर्ग किलोमीटर है।

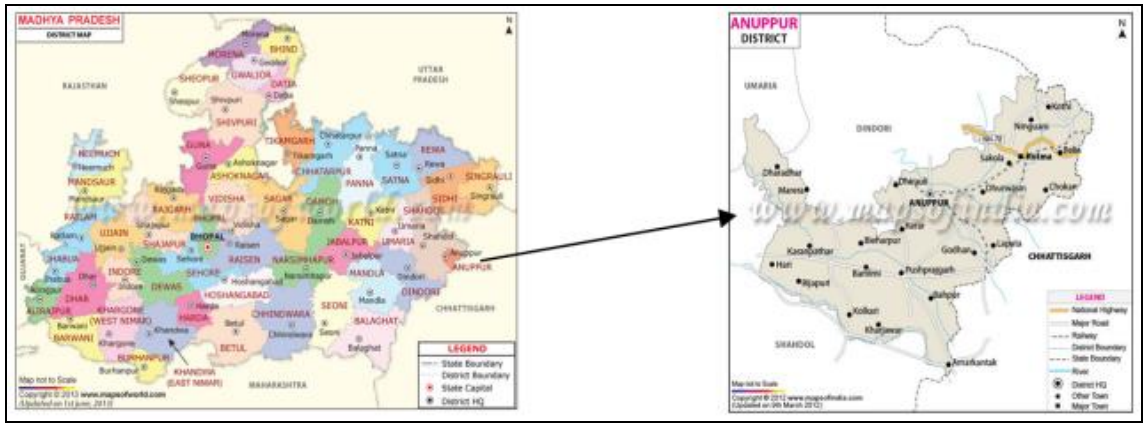

मानचित्र क्रमांक 1.1: मध्यप्रदेश एवं अध्ययन क्षेत्र जिला अनूपपुर का मानचित्र

यहाँ की प्रमुख नदियाँ नर्मदा, सोन, एवं जोहिला नदी हैं, जो इस क्षेत्र को जलसंपन्न बनाती हैं। अनूपपुर की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी है, जहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान 40°C तक पहुँच जाता है और शीत ऋतु में 10°C तक गिर जाता है। वार्षिक वर्षा औसतन 1200–1400 मि.मी. होती है। यह विविध जलवायु और समृद्ध मृदा औषधीय पौधों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। जिले का लगभग 45: भाग वनाच्छादित है, जहाँ सागौन, साल, बेल, आँवला, गुडमार, अश्वगंधा, तुलसी, हर्रा, बहेरा, एवं नीम जैसे अनेक औषधीय पौधे पाए जाते हैं। यहाँ के प्रमुख आदिवासी समुदाय गोंड, बैगा, और धानुक हैं, जिनका जीवन इन वनों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। वे इन पौधों का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा, धार्मिक अनुष्ठानों एवं दैनिक जीवन में करते हैं।

अध्ययन विधि तंत्र

अनूपपुर जिले के आदिवासियों द्वारा औषधीय पौधों के उपयोग का यह अध्ययन व्यक्तिगत सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा अवलोकन पद्धतियों पर आधारित है। इस अध्ययन को व्यवस्थित रूप से पूर्ण करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनाई गईं

प्राथमिक आंकड़ों का संकलन: अध्ययन के लिए अनूपपुर जिले के प्रमुख आदिवासी बाहुल्य ग्राम जैसे पुष्पराजगढ़, कोतमा, जैतहरी और अनूपपुर विकासखंडों के कुछ गांवों का चयन किया गया। इन क्षेत्रों में वनों की अधिकता एवं पारंपरिक चिकित्सा का प्रचलन अधिक पाया जाता है। क्षेत्रीय भ्रमण के दौरान स्थानीय बैगा, गोंड, और धानुक जनजाति के बुजुर्गों, वैद्यों (Traditional Healers) और ग्रामीणों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किए गए। उनसे विभिन्न औषधीय पौधों के नाम, उपयोग की विधि, रोगों के प्रकार तथा पौधों के संरक्षण संबंधी जानकारियाँ प्राप्त की गईं।

द्वितीयक आंकड़ों का संकलन : क्षेत्र के अंतर्गत भौगोलिक एवं स्थानिक विश्लेषण: पौधों के वितरण क्षेत्र का अध्ययन मानचित्रण (Mapping) के माध्यम से किया गया, जिसमें औषधीय पौधों की उपलब्धता एवं वन क्षेत्रों का स्थानिक वितरण प्रदर्शित किया गया।

प्राकृतिक एवं सामाजिक पहलुओं का अध्ययन: पर्यावरणीय परिवर्तन, वनों की कटाई तथा आधुनिक चिकित्सा के प्रभाव से पारंपरिक ज्ञान पर पड़ने वाले असर का भी मूल्यांकन किया गया।

प्रमुख औषधीय पौधे एवं उनके उपयोग

1. नीम – त्वचा रोग, दाँत की सफाई।
2. पीपल – खाँसी, अस्थमा।
3. आँवला – पाचन, बालों के लिए।
4. बेल – पेट दर्द, डायरिया।
5. गिलोय – रोग प्रतिरोधक शक्ति।
6. (अर्जुन – हृदय रोग में उपयोगी।
7. हल्दी – घाव व सूजन में लाभदायक।

एलोवेरा का पौधा

एलोवेरा दुनिया भर के घरों के बगीचों में सबसे पसंदीदा पौधों में से एक है। यह पौधा उष्णकटिबंधीय और अर्ध–उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों का मूल निवासी है, जो इसे कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहने के लिए पर्याप्त मजबूत बनाता है। वनस्पति विज्ञान की दृष्टि से देखें तो, एलोवेरा, एलो नामक वंश का एक रसीला पौधा है। इसकी पहचान इसके मोटे और गूदेदार पत्तों से आसानी से की जा सकती है, जिन पर छोटे–छोटे दांतेदार उभार होते हैं। इसका मुख्य तत्व इन हरे पत्तों में पाया जाने वाला जेल है, जो पानी और कई पॉलीसेकेराइड से बनता है। इस जेल को एसेमैनन के नाम से जाना जाता है । इस जेल में कई लाभकारी गुण होते हैं और इसका व्यापक रूप से बाहरी उपयोग के साथ–साथ सेवन में भी प्रयोग किया जाता है।

एलोवेरा के पौधे के लाभ

1. इस पौधे से निकाला गया रस पाचन संबंधी समस्याओं को ठीक करने में कारगर माना जाता है।
2. एलोवेरा में मौजूद जेल का उपयोग त्वचा की देखभाल, बालों की देखभाल और घरेलू नुस्खों में किया जाता है।
3. मधुमेह रोगियों के लिए, एलोवेरा का पौधा रक्त शर्करा के स्तर को कम करने में मदद करता है।

तुलसी का पौधा

भारतीय उद्यानों में एक आध्यात्मिक स्थान रखने से लेकर चाय के एक कप में एक शक्तिशाली घटक होने तक, तुलसी आपके बगीचे की रानी जड़ी बूटी बन सकती है! यह लैमिएसी कुल का प्रसिद्ध पौधा है। इसकी कई किस्में होती हैं और आमतौर पर इसे चौड़ी, चमकदार हरी पत्तियों से पहचाना जाता है।

तुलसी के पौधे के लाभ

1. तुलसी के पत्तों से बनी चाय खांसी और सर्दी–जुकाम को ठीक करने में सहायक होती है।
2. तुलसी की पत्तियों में मौजूद एडाप्टोजेनिक गुण तनाव और चिंता को कम करने में मदद करते हैं।
3. तुलसी कीटों के काटने से होने वाले त्वचा संक्रमण को रोकने में भी मदद करती है।

करी पत्ता

औषधीय पौधों का बगीचा बनाते समय, हमें उन सुगंधों को नहीं भूलना चाहिए जो हमारे पारंपरिक व्यंजनों में स्वाद और खुशबू भर देती हैं। इस पौधे को बर्गेरा कोएनिगी भी कहा जाता है, जो रूटेसी कुल का एक पौधा है। आप इस पौधे को खरीद सकते हैं और इसकी चमकदार, हरी पत्तियों की सुगंध का आनंद ले सकते हैं।

करी पत्ते के फायदे

1. करी पत्ते विटामिन ए, बी और सी से भरपूर होते हैं। इससे बनने वाले व्यंजनों का स्वाद और भी बढ़ जाता है।
2. इनकी पत्तियों में ऐसे पोषक तत्व होते हैं जो बालों के रोम को मजबूत बनाने में भी मदद करते हैं।

अश्वगंधा

यह औषधियों में उपयोग होने वाले सबसे पुराने पौधों में से एक है। इसमें दिखने में फीके पत्ते होते हैं जिन पर घंटी के आकार के फूल लगे होते हैं जिनमें फल होता है।

अश्वगंधा पौधे के लाभ

1. यह पौधा चिंता और मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है।
2. यह शरीर में रक्त शर्करा के स्तर को कम करने के लिए भी जाना जाता है।
3. शरीर की मांसपेशियों की ताकत बढ़ाने के लिए अक्सर अश्वगंधा का सेवन किया जाता है।

पारंपरिक ज्ञान का स्वरूप

आदिवासी वैद्य (बैगा या गुनी) औषधीय पौधों को पहचानने, संग्रह करने और उपयोग करने में पारंगत होते हैं। वे पौधों की छाल,

पत्तियाँ, जड़, फल या बीज का उपयोग करते हैं। औषधियाँ अधिकतर काढ़ा, लेप या चूर्ण के रूप में तैयार की जाती हैं। औषधीय पौधे मुख्यतः वन क्षेत्रों, नदी किनारों, और पहाड़ी ढलानों पर पाए जाते हैं। सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखलाओं और नर्मदा–सोन जलागम क्षेत्रों में औषधीय वनस्पतियों की घनी उपस्थिति देखी गई है।

पारंपरिक ज्ञान पर आधुनिकता का प्रभाव

आधुनिक चिकित्सा के प्रसार, वनों की कटाई, तथा युवाओं में पारंपरिक ज्ञान के प्रति घटती रुचि के कारण औषधीय पौधों का उपयोग धीरे–धीरे कम होता जा रहा है। कुछ पौधे दुर्लभ होते जा रहे हैं, जिनका संरक्षण आवश्यक है।

संरक्षण की आवश्यकता

औषधीय पौधों के संरक्षण के लिए सामुदायिक जागरूकता, वन विभाग की भागीदारी और एथ्नोबॉटैनिकल गार्डन की स्थापना की आवश्यकता है ताकि यह पारंपरिक ज्ञान आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित रह सके। ग्रामीण अंचल में औषधीय पौधों का उपयोग घर–घर में किया जा रहा है ताकि गांव का हर व्यक्ति अपने घरों में औषधीय पौधों का संरक्षण करे जिससे आने वाली पीढ़ी को हम इन बहुमूल्य औषधीय पौधों की उपयोगिता के बारे में बता सके।

सुझाव

1. औषधीय पौधों के संरक्षण हेतु विशेष योजना बनाई जाए, विशेषकर वनों के अंदर स्थित प्रजातियों के लिए।
2. आदिवासी वैद्यों (बैगा/गुनी) के पारंपरिक ज्ञान को दस्तावेजी रूप में संरक्षित किया जाए।
3. विद्यालयों और महाविद्यालयो में एथ्नोबॉटनी विषय को बढ़ावा दिया जाए ताकि युवा इस दिशा में जागरूक हों।
4. औषधीय पौधों के उद्यान (Herbal Gardens) प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर स्थापित किए जाएँ।
5. स्थानीय लोगों को पौधों की सतत् कटाई और पुनर्रोपण की तकनीक सिखाई जाए।
6. सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों के सहयोग से जनजागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
7. औषधीय पौधों के वाणिज्यिक उपयोग को प्रोत्साहित किया जाए ताकि आदिवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।
8. वन विभाग द्वारा औषधीय पौधों की सूची एवं भौगोलिक मानचित्रण तैयार किया जाए।

परिणाम

अनूपपुर जिले के आदिवासी समुदायों के बीच किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि यह क्षेत्र औषधीय पौधों की विविधता से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ के वनों में अनेक प्रकार की जड़ी–बूटियाँ और औषधीय वृक्ष पाए जाते हैं, जिनका उपयोग आदिवासी लोग सदियों से करते आ रहे हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान में रोग–निवारण के अनेक प्राकृतिक उपाय निहित हैं।

निष्कर्ष

अनूपपुर जिले के आदिवासी समुदायों के बीच किया गया यह अध्ययन दर्शाता है कि यह क्षेत्र औषधीय पौधों की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है और यहाँ के निवासियों के पास प्रकृति–आधारित चिकित्सा का गहरा पारंपरिक ज्ञान मौजूद है। गोंड, बैगा, और धानुक जैसी जनजातियाँ सैकड़ों वर्षों से वनों में पाए जाने वाले पौधों का उपयोग विविध रोगों के उपचार में करती आई हैं। यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि औषधीय पौधों का भौगोलिक वितरण पर्यावरणीय परिस्थितियों पर निर्भर है विशेषकर तापमान, वर्षा और स्थलाकृति पर। वन क्षेत्र जितना घना और जैव विविधता से भरपूर है, वहाँ औषधीय पौधों की संख्या उतनी ही अधिक पाई गई। हालाँकि, आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों के प्रसार, शहरीकरण, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के अति–दोहन के कारण पारंपरिक औषधीय ज्ञान धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है। यदि इसे संरक्षित नहीं किया गया, तो यह अमूल्य लोकज्ञान आने वाली पीढ़ियों के लिए खो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि औषधीय पौधों के संरक्षण, जनजातीय ज्ञान के दस्तावेजीकरण, और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से इस प्राकृतिक धरोहर को सुरक्षित रखा जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. त्रिपाठी, आर. (2018). भारतीय जनजातियाँ और पारंपरिक औषधीय ज्ञान, भारतीय प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली।
2. शर्मा, एल. पी. (2020). मध्य प्रदेश की एथ्नोबॉटनी, भोपाल विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. Verma D, Singh R. Medicinal Plants and Their Traditional Use in Central India. Journal of Ethnobotanical Research,2017:12(3):45–56.
4. Government of Madhya Pradesh. Forest and Biodiversity Report of Anuppur District. Forest Department, Bhopal, 2022.
5. Jain SK. Ethnobotany and Medicinal Plants of India. Deep Publications, New Delhi, 1995.
6. Mishra P. Tribal Herbal Practices in Madhya Pradesh. Indian Journal of Environmental Studies,2019:8(2):120–128.
7. Census of India. District Census Handbook: Anuppur. Government of India, New Delhi, 2011.
8. Pandey R, Gupta A. Traditional Healing Practices among Baiga Tribe of Madhya Pradesh. Indian Botanical Research Review,2021:15(1):34–42.